अहंकार और ममकार

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

अहंकार और ममकार दोनों बुराई हैं। रावण बहुत बड़ा ज्ञानी था किन्तु अहंकार और ममकार के कारण उसका विनाश हो गया। रावण जिस समय मरण शय्या पर पड़ा हुआ था तब श्रीराम ने लक्ष्मण को रावण से ज्ञान प्राप्त करने के लिए कहा। लक्ष्मणजी रावण के पास जाकर ज्ञान प्राप्त करने का उपक्रम किया। किन्तु रावण ने लक्ष्मण की तरफ देखा भी नहीं। लक्ष्मण निराश होकर लौट आये। श्रीरामजी ने पूछा ज्ञान प्राप्त कर लिये। लक्ष्मणजी ने कहा कि रावण ने तो मेरी तरफ देखा ही नहीं। श्रीरामजी ने कहा कि कहां खड़े थे? लक्ष्मणजी ने कहा रावण के सिर के पास। रामचन्द्रजी ने लक्ष्मण से कहा कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए विनम्रता होनी चाहिए। अब पुनः जाकर रावण के पैरों के पास खड़े होकर ज्ञान की याचना करना। लक्ष्मणजी जब रावण के पास गये उसके पैरों के पास खड़े होकर प्रणाम किया और रावण ने लक्ष्मण को ज्ञान और नीति की बात बताई।

विद्या विनम्रता से सीखी जाती है। अहंकार गुणों को नष्ट कर देता है। जो व्यक्ति अहंकारी होता है वह अपने अलावा किसी को कुछ नहीं समझता। मानव के व्यक्तित्व में सामंजस्य की भावना का विकास होना चाहिए। व्यक्ति को सबकी बातों को सुनना चाहिए। अन्त में सबके सार को ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। ज्ञान प्राप्त करने के लिए विनम्रता की भावना होनी चाहिए। जिस व्यक्ति में विनम्रता होती है उसका सर्वत्र आदर होता है। लघुता से प्रभुता की प्राप्ति स्वयं हो जाती है। अहंकार व्यक्ति को अवन्नति के गर्त में डाल देता है।

क्रोध, मान, माया, लोभ अनर्थ के मार्ग हैं। भौतिक सुख सुविधाओं को सब कुछ मानकर उस पर गर्व करना, यह मेरा है, यह तेरा है ऐसी भावना रखना अहंकार और ममकार है। अहंकार विनाश का मूल है। भौतिक सुख सुविधाएं नश्वर हैं। इस पर गर्व करना सबसे बड़ी मूर्खता है। यह मेरा घर है, यह मेरा पुत्र है, यह मेरी पुत्री है, यह मेरी पत्नी है ऐसी भावना करना ममकार की भावना है। मानव भौतिक सुख सुविधाओं में इतना लिप्त रहता है कि वह अपने सच्चे स्वरूप को पहचान ही नहीं पाता। जब अन्त में मृत्यु नजदीक आती है तब उसे अपने पूर्व जन्म में किये गये कार्यों पर पछतावा होता है। वह यही सोचता है कि मैंने अपने अमूल्य जीवन को व्यर्थ में ही गवा दिया। इसलिए मनुष्य को अहंकार और ममकार नहीं करना चाहिए। क्रोध, मान, माया, लोभ की चण्डाल चौकड़ी अहंकार का वर्धन करती है। एक के आने पर अन्य दुर्गुण अपने आप आ जाते हैं। अतः इन दुर्गुणों को अपने पास कभी नहीं आने देना चाहिए।

शरीर में कर्ता भाव अहंकार है। यह मेरा है, यह तुम्हारा है यह भाव अहंकार को जन्म देता है। इससे कर्मबन्धन होता है। कर्म बन्धन के टूटने से आत्मा का स्वाभाविक रूप प्रकट होता है। अहंकार के नष्ट होने से विनम्रता और लघुता का आभास होता है। लघुता का अर्थ है– हल्कापन, विनम्रता, अच्छाई, निरहंकारता। लघुता मानव का एक बहुत अच्छा गुण है। प्रभुता का अर्थ है– अहंकार। जिस व्यक्ति में लघुता होती है, जिस व्यक्ति में विनम्रता होती है, जिस व्यक्ति में निरहंकारता होती है, उस व्यक्ति का सामाजिक विकास सांस्कृतिक विकास बहुत अधिक होता है। ऐसा व्यक्ति सहनशील और दूसरों को सम्मान देने वाला होता है। किन्तु जिस व्यक्ति में अहंकार होता है उसका धीरे–धीरे पतन हो जाता है। भगवान् श्रीरामचन्द्र और लंकापति रावण का दृष्टान्त इस संबंध में विचारणीय है। जब भगवान् राम और रावण की सेनाएं आमने–सामने आकर के खड़ी हुई तो भगवान् राम पैदल, बिना अस्त्र–शस्त्र के भालू–बन्दरों की सेना के साथ खड़े थे। दूसरी तरफ रावण रथ पर सवार और चतुरंगड़ी सेना के साथ अहंकार से युक्त युद्ध क्षेत्र में भगवान् राम को ललकार रहा था। यह युद्ध लघुता और प्रभुता का युद्ध था, जिसमें लघुता विजयी हुई और प्रभुता पराजित।

लघुता का गुण शिक्षा, विद्या और दूसरों को सम्मान देने से प्राप्त होता है। विद्या को प्राप्त करने के बाद भी यदि लघुता नहीं आई तो समझना चाहिए कि विद्या का वास्तविक मूल्य अभी नहीं प्राप्त हुआ। जिस समय वृक्ष में फल आता है तो वृक्ष की शाखाएं नम जाती है। इसी प्रकार विद्या और विनय से सम्पन्न व्यक्ति नम्र बन जाता है। परन्तु कुछ लोग ऐसे है कि विद्या की प्राप्ति के बाद भी उनमें नम्रता न आकर अहंकार आ जाता है और यह अहंकार उनके विनाश का कारण होता है।

वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत और आगमों में यही बताया गया है कि मानव को विनयशील होना चाहिए। समाज में जहां हित चिंतन की बात हो समाज के हर सदस्य को इसके लिए मिलजुलकर कार्य करना चाहिए। विकास के किसी काम में समाज के हर व्यक्ति को मिलकर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। राष्ट्र के संबंध में भी यह विचारणीय है। राष्ट्र को आंतरिक और बाह्य दोनों दृष्टियों से संबंध बनाकर आगे बढ़ना चाहिए। राष्ट्राध्यक्ष का कर्त्तव्य होता है कि वह विश्व के अनेक देशों के साथ मित्रता का व्यवहार करें, पड़ोसी देशों के साथ सहअस्तित्व और भाईचारे का संबंध होना चाहिए।